विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-२९/०८/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

पाठ:-सप्तम: पाठनाम पर्यावरण- विज्ञानम्

गद्याश:- येन अस्माकम् पृथ्वी अचिरमेव प्राणिनां कृते

न वासयोग्या भविष्यति ।पर्यावरणस्य प्रदूषणस्य परिणामम्

उत्तरोत्तरं वर्धते एव ।स्वार्थसाधने संलग्ना: मानवा: गंगादीनां

महानदीनां जलानि दूषयन्ति ,वनानि छिन्दन्ति , वन्यजीवान्

घातयन्ति । इदानीं वायुमण्डले 'कार्बनडाईआक्साइड'
वाष्पस्य मात्रा उत्तरोत्तरं वृद्धिं गच्छति ।

शब्दार्था:-

अचिरमेव- शीघ्र ही , प्राणिनां कृते – प्राणियों के लिए ,

उत्तरोत्तरं – आगे – आगे , वर्धते – बढ रही है , संलग्ना: -

लगे हुए , छिन्दन्ति -काटते हैं , घातयन्ति – मारते हैं

अर्थ- जिससे हमारी यह धरती शीघ्र ही जीवों के लिए

रहने योग्य नहीं रहेगी। पर्यावरण प्रदूषण के परिणाम

आगे आगे बढ ही रहे हैं। स्वार्थसाधन में लिप्त मनुष्य

गंगा आदि महानदियों के जल को प्रदूषित कर रहे हैं।

जंगलों को काट रहे हैं। जंगली जीवों को मार रहे हैं।

इस समय वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड वाष्प
की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है।